मीडिया की पहल के मायने

इंदौर में कुछ माह पूर्व एक उद्योगपति की लड़की के विवाह का समाचार इंदौर के प्राय: सभी समाचारपत्रों में तीन दिन तक आधापृष्ठ घेरे रहा। इतने बाराती, इतनी कारें, इतना खाना, ऐसी रोशनी आदि का पूरा विवरण दिया गया। ऐसे ही फैशन शो बाजार में आई नई चीजें, खाने के नये ठिकाने, मनोरंजन के नये उपाय और साधन भी अब समाचार है। इन सब समाचारों के बीच बिजली की संकट, पानी की किल्लत, रोजगार की समस्या आदि सब नेपथ्य में चले गए हैं। मानों यह सब है हीं नहीं। नहीं तो ठीक है। पर वे हैं और बढ़ हे हैं परन्तु लागों की जानकारी और संवाद से वे लगातार गायब हा रहे हैं। यह हाल टी. वी. चैनल पर ाी है। क्या अब हमारी यही संवाद-प्राथमिकताएं हैं-यही मूल्यवान खबरें है ?

एक और खबर पर विचार करें। कुछ लोगों ने मिलकर फर्जी नाम से बीमा कराय। एक अनजान व्यक्ति का बीमाधारी के रूप में सूमों से कुचलकर मार डाला और बीमा की राशि उसका परिवरजन बनकर हड़प ली, इसमें वकील, बीमें का जानकार बीमा कार्यालय का कर्मी उद्यमी शामिल है। ऐसा बन रहा है समाज। अर्थात शिक्षित और विशेषज्ञ भी इब ऐसे अपराधों में शामिल हो रहे हैं। देह व्यापार के मामले में एक पूरे परिवारने अर्थात पिता, पत्नी, पुत्रियों ने शामिल होकर कई शहरों में कई युवतियों को फांसकर एक संजाल बनाया। इस दशा में पहुंच रहा है समाज। यह जीवन के मूल्य हैं।

ऐसे कई स्कुल है जहाँ के. जी. या पहली कक्षा की फीस 1000 रू. महीना है। व्यवसायी शिक्षा अब एक लाख या अधिक रूपये देने पर ही मिल सकती है। - चिकित्सा, इलेक्ट्रानिकी, इंजीनियरिंग आदि सभी विषयों की अस्पताल में एक बार ार्ती जर हो जायें- दस हजार से 2 लाख का व्यय सामान्य कहा जाने लगा है। सेवा के सभी क्षेत्र, विकास के सभी उपाय समर्थ के लिए हैं। बिजली की चोरी करो या बिजली के बिना रहो- यह हालात किसी भी आंचलिक क्षेत्र में देखे जा सकते हैं।

कहने को धर्म, समाज, संवेदना, सहकार, सहयोग सबकुछ है-पर समाज में हत्या, झगड़े, वैमनस्य, अहंभाव, उदासीनता, ना कहू से दोस्ती, सब लोगों से बैर जैसी स्थिति बन रही है। खबरें और मीमांसा भी इस पर हैं। समर्थ-असमर्थ, अयोग्य - अयोग्य, अपराधी-गुणवान जैसी खाईयां लगातार बढ़ रही है। इन्हें पाटा धीरे-धीरे असंभव होता जा रहा है। इस इकाई के तल पर भी और समूह के रूप में थी।

ऐसे समाज के लिए व्यवसाय केन्द्रित मीडिया क्या कर रहा है, क्या करेगा, क्या कर सकताहै और क्या करना चाहिए - जैसे उपाय बहस के ही हिस्से है - आचरण के नहीं मसलन, इंडियन इंस्टीटयूट आफ मैनेजमेन्ट लखनऊ में आयोजित एक चर्चा में कारपोरेट प्रबंधकों ने अंग्रेजी के एक समाचारपत्र के सम्पादक से पूछो कि आप यह कैसे निश्चित कर लेते हैं कि अमुक अखबार को इतने लोग पढ़ते हैं, खासकर तब ज अखबार की कीमत बढ़ने की बजाए घट रही होती है। उनकाआशय साफ था कि पाठक आंकड़ों की विश्वसनीयता पर जिसके आधार पर समाचारपत्र गत 3-4 वर्षो में बढ़त की स्पर्धा का खेल-खेल रहे है। एक उदाहरण यह भी यह समझें। एक टीवी चैनल ने अपने एक कार्यक्रम पर महिला दर्शकों की राय जानना चाही। इस कार्यक्रम में महिला के पर पुरूष संबंध का उचित ठहराने की कोशिश की गई थी। राय भी इसी पर थी। एक नगर की एक महिला ने प्रश्न कर्ता से पूछा कि आप यह दिखला कर क्या इस तरह के संबंधों की वृद्धि करना चाहते है? और क्या ऐसे संबंध परिवार संस्था को मजबूत करेंगे? क्या इससे हर व्यक्ति शक के दायरे में खड़ी नहीं होगी ? प्रश्नकर्ता के पास इसके जबाब नहीं थे। हाँ बहस जरूर थी।

दरअसल जब वह समय आ गया है जब मीडिया सिर्फ सूचनाओं का वाहक भर नहीं बना रह सकता। उसे समाज मूल्यों के लिए सूचनाओं की समग्र पूर्ति और व्याख्या करनी होगी। होगी, कहने का कारण है वह

विषय जिसके सम्बन्ध में मीडिय का उपयोगकर्त्ता - पाठक, श्रोता, दर्शक-रूचि रखता तो पर उसे समझनाभी चाहता है। वह मीडिया को अपने लिए उपयोगी मानता है।

ऐसे कुछ प्रयास मीडिया की पहल के रूप में सामने आये हैं। उनमें से कुछ उदाहरण हैं-लोकमत ने महिलाओं, युवकों के लिए मूल्यपरक उपाय रचे सखीमंच, युवामंच के रूप में। वैज्ञानिक दृष्टि रखी औरअंधश्रद्धा का विरोध किया। उदयपुर के पत्रकारों ने मिलकर उस तथ्य को खोजा जो अधूरे सच के रूप में लोगों को भयग्रस्त बना रहा था। इससे परिवार की लड़ाई को साम्प्रदायिक रूप लेने से बचाया गया। विदर्भ महाराष्ट्र के एक सम्पादक, सुरेश द्वादशीवार ने नक्सली हिंसा के विरोध शांति यात्रा की पहल की और सत्ता के लिए केंचूल बदलने वालों से कहा कि आपकी इसमें जरूरत नहीं हैं। विकास के लिए समर्पित एक पत्रकार ने सुविधाओं वाली नौकरी के बजाए गांव-कस्बों की कठिन यात्रा करके विकास के अवरोधों को सामने लाने का मार्ग चुना। ऐसे ही और पत्रकार, अखबार, चैनल - सभी प्रदेशों में होंगे।उनमें बड़े-छोटे सभी होंगे पर वे सभी समवेत नहीं है। उनका वह ध्येय घोषित नहीं है। वे उपाय उनका आधार - मूल्य नहीं बना है - संवेदन तो है पर उद्देश्य नहीं है। दरअसल मूल्यनिष्ठ मीडिया के रूप में इन्हीं पहलों को समवेतकरना और इन संवेदनों को एक स्थायी धारा का रूप देने का प्रयास होना चाहिए। मीडिया इनीशियेटीव फार वैल्यूज पत्रकारों का ऐसा ही एक प्रयास सामने आया है।

ऐसे लोग संभवत: बड़ी संख्या में होंगे जो यह मानते हैं कि पत्रकार का समाज सरोकार कायम है। यह सरोकार व्यवसाय निष्ठा के कारण नहीं, पत्रकारिता के मूल ध्येय के कारण है। यह अंतर मीडिया के स्वामी और मीडिया के सर्जक का अंतर है, जो रहेगा, रहना भी चाहिए। इस सबको मुल्यानुगत प्रवाह देने का काम करना इसी पहल का अर्थ है। कोई भी नदी सागर के फैलाव से नहीं निकलती पर सागर मे विलय होते समय वह गंगा सागार जैसा विशेषण पा लेती है। मीडिया-मूल्य और समाज के जीवन-मूल्य पूरक हैं और इसलिए इस दृष्टि और इस सरोकारों को मीडिया कर्मियों के वैयक्तिक व्यवहार तथा व्यावहारिक व्यवहारों में भी परीलाक्षित होना समय की जरूरत है।

प्रोफेसर कमल दीक्षित